क़ुरआन और पैग़म्बर

सैयद अबुल आला मौदूदी

अनुवाद
मुहम्मद अहमद

मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स
नई दिल्ली-११००२५

टणठ'इछ अणठ झअखत्रक्षअचइएठ *(कळपवळ)*

इस्लामी साहित्य ट्रस्ट प्रकाशन न.-३८

ʿसर्वाधिकार सुरक्षित

नाम मूल किताब : *क़ुरआन और पैग़म्बर* (उर्दू)

प्रकाशक : **मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स**
ऊ-३०७, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-११००२५
दूरभाष: २६९११६५२, २६३१७८५८

संस्करण : २००४ ई.

मूल्य : १५.००

कम्पोज़िंग : उरूफ़ इन्टरप्राइज़ेज़, नई-दिल्ली -८५

मुद्रक : दावत आफ़सेट दिल्ली-६

१. वैदिक साहित्य के अनुसार यह उस ईश्वर का नाम है जो दयावान, संकटमोचक है (ऋ. ६/४९/१३)। इनका मुख्य कार्य संयोजन, धारण, केन्द्रीकरण तथा संरक्षण है। 'विष्णु' शब्द वास्तव में परमसत्ता परमेश्वर के अनेक गुणवाचक नामों में से एक नाम है। इस शब्द की व्युत्पत्ति विष्लृ धातु से हुई है, जिसका अर्थ है 'सर्वत्र फैलना, व्यापक होना।' महाभारत (५.७०.१३) के अनुसार विष्णु उस प्रभु का नाम है जो सर्वत्र व्याप्त है और समस्त जगत् का स्वामी है। ऋ(१.१५६.२) में नित्य, जगतकर्ता, नवीनतम तथा स्वयं उत्पन्न प्रभु के पर्याय में 'विष्णु' रूप में की गई है। — संपादक

२. श्रीमद्भगवद्गीता के समस्त उद्धरण– श्लोक एवं अनुवाद ''श्रीमद्भगवद्गीता (हिन्दी-टीकासहित)'', प्रकाशक गीता प्रेस गोरखपुर, उन्नतीसवां संस्करण, सं. २०५८ से उद्धृत हैं। — संपादक

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ईश्वर के नाम से जो अत्यन्त दयावान और कृपाशील है।

प्रकाशकीय

यह पुस्तक 'क़ुरआन और पैग़म्बर' जो आपके हाथ में हैं, नया संशोधित संस्करण है। इस पुस्तक की उपादेयता और महत्व को देखते हुए इसमें बहुत से आधारभूत संशोधन कर दिए गए हैं। मुख्यत: संस्कृत ग्रंथों के उद्धरण एवं उनके अनुवादों में सुधार किया गया है। लेखक के उन बयानों एवं उद्धरणों के अवतरण-स्रोत भी संदर्भ ग्रंथों से खोजकर दे दिए गए हैं, जिन्हें लेखक बिना अवतरण-स्रोत का उल्लेख किए अपनी बात कहते चले गए हैं। इस दृष्टि से पुस्तक और अधिक उपयोगी बन गई है।

इस पुस्तक के उपरोक्त सम्पादकीय एंव संशोधनात्मक कार्यो तथा संदर्भ ग्रंथों से अवतरणों को खोजने आदि का उत्तरदायित्व जनाब एस. कौसर लईक़ ने निभाया है। जिनका प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

ज्ञात रहे कि इस पुस्तक के प्रकाशन एवं लेखक के लिखने का उद्देश्य इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि मानव को यथार्थ से अवगत कराया जाए। महापुरुषों, पैग़म्बरों (ईशदूतों) के संबंध में ईश्वरावतार या उनके स्वंय ईश्वर होने का जो दृष्टिकोण मनुष्य अपनाता रहा है, उसमें सुधार करे और सत्य का जिज्ञासु बने।

पुस्तक की शुद्धता की दिशा में हमारे पूर्ण प्रयास के उपरांत भी यदि कोई त्रुटि पाठकों को मिलती है तो वे हमें उससे अवगत करें, ताकि हम आगामी संस्करण में उसका सुधार कर सकें।

– प्रकाशक

क़ुरआन और पैग़म्बर

संसार में मनुष्य के मार्गदर्शन और रहनुमाई के लिए हमेशा ऐसे पवित्र आत्मा लोग पैदा होते रहे हैं, जिन्होंने अपनी कथनी और अपनी करनी से इंसान को हक़ और सच्चाई का सीधा रास्ता दिखाया है। लेकिन उनके इस एहसान का बदला मनुष्य अक्सर ज़ुल्म ही की शक्ल में देता रहा है। उनपर ज़ुल्म सिर्फ़ उनके विरोधियों ही ने नहीं किया, बल्कि उनके श्रद्धालुओं ने भी किया। एक ओर जहाँ विरोधियों ने उनकी शिक्षाओं के प्रति बेरुख़ी बरती, उनकी सच्चाई से इनकार किया, उनके पैग़ाम को ठुकराया और उनको तकलीफ़ें देकर सत्यमार्ग से हटाने की कोशिश की, वहीं दूसरी ओर उनके श्रद्धालुओं ने भी उनके बाद उनकी शिक्षाओं को बिगाड़ा, उनके आदेशों को बदल डाला, उनकी किताबों में काट-छाँट की और ख़ुद उनके व्यक्तित्व को अपनी चमत्कारपसंदी का खिलौना बनाकर ईश्वरत्व और ख़ुदाई का रूप दे दिया। पहली क़िस्म का ज़ुल्म तो इन पवित्रात्मा लोगों की ज़िन्दगी तक या अधिक-से-अधिक कुछ साल बाद तक ही सीमित रहा लेकिन दूसरी क़िस्म का ज़ुल्म उनके बाद सदियों तक होता रहा और बहुत से महापुरुषों के साथ आज तक हो रहा है।

दुनिया में आज तक जितने सच्चाई का संदेश सुनाने वाले आए हैं, उन सबने अपना जीवन उन झूठे ईश्वरों के ईश्वरत्व को ख़त्म करने में लगाया, जिन्हें इंसान ने एक ईश्वर को छोड़कर अपना ईश्वर बना लिया था। परन्तु हमेशा यही होता रहा कि उनके बाद उनके अनुयायियों ने अज्ञानतापूर्ण श्रद्धा के कारण ख़ुद उन्हीं को ईश्वर या ईश्वरत्व में ईश्वर का भागीदार बना लिया और वे भी उन्हीं उपास्यों में शामिल कर लिए गए, जिनके खंडन और विरोध में उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया था।

वास्तव में इंसान अपने आप से कुछ ऐसा बदगुमान है कि उसे मानवता में पुण्य आचरण और पवित्र स्वभाव की संभावना का बहुत कम यक़ीन होता है। वह अपने आपको सिर्फ़ कमज़ोरियों और नीचता का संग्रह समझता है। उसका ज़ेहन इस महान वास्तविक तथ्य के ज्ञान और विश्वास से प्राय: ख़ाली रहता है कि इस मिट्टी की काया को सर्वशक्तिमान ईश्वर ने वे शक्तियाँ और प्रवृत्तियाँ प्रदान की हैं जो उसको इंसान होने और इंसानी गुणों से विशिष्ट रहने पर भी पवित्र लोक में सिद्ध फ़रिश्तों से भी ऊँचे दर्जे तक पहुँचा सकती हैं। यही वजह है कि जब भी इस संसार में किसी इंसान ने अपने आपको ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में पेश किया है तो उसको दूसरे इंसानों ने पहले तो यह देखकर कि यह तो हमारे ही जैसा शरीर रखनेवाला इंसान है, उसे ईश्वर तक पहुँच रखनेवाला मानने से साफ़ इंकार कर दिया। और जब अन्तत: उसके व्यक्तित्व में असाधारण गुण देखकर श्रद्धाभरी नज़र डाली तो फिर कहा कि जो व्यक्ति ऐसे असाधारण गुण रखता हो, वह हरगिज़ इंसान नहीं हो सकता। फिर किसी समूह ने उसे भगवान बनाया, किसी ने अवतार का सिद्धांत गढ़कर यक़ीन कर लिया कि ईश्वर ने उसकी शक्ल में जन्म लिया था, किसी ने उसके अन्दर ईश्वरीय गुणों और ईश्वरीय अधिकारों का भ्रम पाला और किसी ने समझ लिया कि वह ख़ुदा का बेटा है। हालांकि क़ुरआन के अनुसार ईश्वर इन सब अवगुणों से पाक और श्रेष्ठ है।

संसार के किसी धर्मगुरु की ज़िन्दगी को लीजिए। आप देखेंगे कि उसपर सबसे अधिक अत्याचार स्वयं उसके श्रद्धालुओं ने किया है। उन्होंने उसपर अपनी कल्पनाओं और अन्धविश्वासों के इतने परदे डाल दिए कि उसका रंग-रूप देखना पूरी तरह असंभव हो गया है। केवल यही नहीं कि उनके परिवर्तित बदले हुए ग्रन्थों से यह मालूम करना मुश्किल हो गया है कि उसकी मूल शिक्षा क्या थी, बल्कि हम उनसे यह भी नहीं मालूम कर सकते कि वह ख़ुद वास्तव में क्या था? उसके जन्म में अजूबापन, उसकी बाल्यावस्था में अस्वाभाविकता, उसकी जवानी और बुढ़ापे में भी विचित्रता और उसकी ज़िन्दगी की हर-हर बात में चमत्कार और उसकी मौत तक में अनोखापन, सारांश यह कि वह शुरू से लेकर अन्त तक एक कहानी ही कहानी नज़र आता है और उसको इस रूप में पेश किया जाता है कि या तो वह ख़ुद ईश्वर था या ईश्वर का बेटा था या ईश्वर का अवतार या कम से कम एक ईश्वर का किसी न किसी पहलू से साझीदार था।

मिसाल के तौर पर गौतम बुद्ध जी को देखिए। बौद्धमत के गहरे अध्ययन से सिर्फ़ इतना अनुमान किया जा सकता है कि उस उच्च संकल्प और हिम्मतवाले इंसान ने ब्राह्मणवाद की बहुत-सी ग़लतियों का सुधार किया था और विशेष रूप से उन बेशुमार सत्ताओं के ईश्वरत्व का खण्डन किया था, जिनको उस समय के लोगों ने अपना उपास्य बना लिया था। परन्तु उनकी मृत्यु के बाद एक सदी भी नहीं बीती थी कि वैशाली की सभा में उनके अनुयायियों ने उनकी सारी शिक्षाओं को बदल डाला। मूल सूत्रों के स्थान पर नये सूत्र बना लिए और आधारभूत सिद्धान्तों और उनपर निर्धारित व्यवस्थाओं में अपनी इच्छाओं तथा विचारों के अनुसार मनमानी की। एक ओर उन्होंने बुद्ध के नाम से अपने मत के ऐसे विश्वास नियत किये, जिनमें ईश्वर का कहीं भी कोई वजूद ही न था और दूसरी ओर बुद्ध को सर्व-बुद्धि और जगत का आधार तथा एक ऐसा अस्तित्व मान लिया जो प्रत्येक युग में संसार के सुधार के लिए बुद्ध बनकर आया करता है। उसके जन्म, जीवन

और पिछले और भावी जन्मों के सम्बन्ध में ऐसी-ऐसी अद्भुत कहानियाँ बना लीं जिनको पढ़कर प्रोफ़ेसर विल्सन जैसे अनुसंधानकर्ता हैरान होकर यह कह उठते हैं कि इतिहास में वस्तुत: बुद्ध का कोई अस्तित्व ही नहीं है। तीन-चार शताब्दी के भीतर इन कहानियों ने बुद्ध में ईश्वरत्व का रंग पैदा कर दिया और कनिष्क के ज़माने में बौद्ध मत के पंडितों और नेताओं की एक बहुत बड़ी सभा ने (जो कश्मीर में आयोजित हुई) फ़ैसला कर लिया कि बुद्ध वास्तव में ईश्वर के भौतिक रूप थे या दूसरे शब्दों में ईश्वर उनके रूप में प्रकट हुआ था।

यही व्यवहार रामचन्द्र जी के साथ हुआ। वैदिक साहित्य[१] एव स्वयं रामायण[२] के अध्ययन से साफ़ तौर से पता चलता है कि राजा रामचन्द्र जी केवल एक इंसान थे। वे नेक दिली, न्याय, वीरता, उदारता, सद्व्यवहार, दया और त्याग में पराकाष्ठा को ज़रूर प्राप्त हुए थे, परन्तु ईश्वरत्व उनमें ज़रा-सा भी न था। लेकिन मनुष्यता और इन श्रेष्ठ गुणों का एकत्र होना एक ऐसी समस्या सिद्ध हुई कि भारतवासी उसका हल न कर सके। अत: रामचन्द्र जी की मृत्यु के बहुत दिन बाद यह धारणा बना ली गई कि वे विष्णु जी के अवतार थे। और वे उन लोगों में से एक थे, जिनके रूप में विष्णु जी संसार के सुधार के लिए विभिन्न युगों में अवतार लेते रहे हैं।

श्री कृष्ण जी पर इस विषय में इन दोनों से अधिक ज़ुल्म किया गया। भगवद्गीता परिवर्तन की कई सीढ़ियाँ पार करके जिस रूप में हम तक पहुँची है, उसके गहन अध्ययन से कम से कम इतना पता चलता है कि कृष्ण जी एकेश्वरवादी व्यक्ति थे और उन्होंने ईश्वर की सत्ता के बारे में सर्वशक्तिमान होने का उपदेश दिया था। परन्तु महाभारत, विष्णु पुराण, भागवत पुराण आदि पुस्तकें और स्वयं गीता उनको इस रूप में पेश करती है कि एक ओर वह विष्णु[१] के साक्षात् अवतार, सृष्टि के रचयिता और ब्रह्माण्ड के नियन्ता दिखाई देते हैं, वहीं दूसरी ओर ऐसी बातें उनसे जोड़ी जाती हैं कि उन्हें भगवान तो भगवान, सदाचारी इंसान मानना भी कठिन हो जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता[२] में कृष्ण जी के ये कथन हमें मिलते हैं –

पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामह: ।
वेद्यं पवित्रमोंकार ऋक्साम यजुरेव च ॥
गतिर्भर्ता प्रभु: साक्षी निवास: शरणं सुहृत् ।
प्रभव: प्रलय: स्थानं निधानं बीजमव्ययम् ॥
तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्वाम्युत्सृजामि च ।
अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन ॥
(श्रीमद्भगवद्गीता, ९/१७-१९)

''मैं ही इस सम्पूर्ण जगत् का धाता अर्थात् धारण- पोषण करनेवाला एवं कर्मों के फल को देनेवाला तथा पिता, माता और पितामह हूँ और जानने योग्य पवित्र ओंकार तथा ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद भी मैं ही हूँ। हे अर्जुन! प्राप्त होने योग्य तथा भरण-पोषण करने वाला सबका स्वामी, शुभाशुभ का देखनेवाला, सबका वासस्थान और शरण लेनेयोग्य तथा प्रति-उपकार न चाहकर हित करनेवाला और उत्पत्ति, प्रलयरूप तथा सबका आधार निधान और अविनाशी कारण भी मैं ही हूँ। मैं ही सूर्यरूप हुआ तपता हूँ तथा वर्षा को आकर्षण करता हूँ और वर्षाता हूँ और हे अर्जुन! मैं ही अमृत और मृत्यु एवं सत् और असत् भी सब कुछ मैं ही हूँ।''

श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय १० में कहा गया है –

न मे विदु: सुरगणा: प्रभवं न महर्षय: ।
अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वश: ॥२॥
यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।
असम्मूढ: स मर्त्येषु सर्वपापै: प्रमुच्यते ॥३॥

''मेरी उत्पत्ति को न देवता लोग न महर्षिजन (ही) जानते हैं, क्योंकि मैं सब प्रकार से देवताओं का और महर्षियों का (भी) आदि कारण हूँ। जो मुझको अजन्मा, अनादि और लोकों का महान ईश्वर तत्व से जानता है वह मनुष्यों में ज्ञानवान् पुरुष सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है।''

इसी अध्याय में कहा गया है –

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थित: ।

अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥२०॥
आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥

अर्थात् ''हे अर्जुन! मैं सब भूतों के हृदय में स्थित हूँ तथा सम्पूर्ण भूतों का आदि, मध्य और अंत भी मैं ही हूँ। मैं अदित के बारह पुत्रों में विष्णु (और) ज्योतियों में किरणोंवाला सूर्य हूँ (तथा) मैं उनचास वायु देवताओं का तेज़ (और) नक्षत्रों का अधिपति चन्द्रमा हूँ।''

इसी अध्याय में आगे कहा गया है –

न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥
(गीता १०/३९)

अर्थात ''वह चर और अचर (कोई भी) भूत नहीं है, जो मुझ से रहित हो।''

विष्टभ्याहमिदं, कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥४२॥

''मै इस सम्पूर्ण जगत् को अपनी योगमाया के एक अंशमात्र से धारण करके स्थित हूँ, इसलिए मेरे को ही तत्व से जानना चाहिए।''

अध्याय ११ में कहा गया है –

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्त: सङ्गवर्जित: ।
निर्वैर: सर्वभूतेषु य: स मामेति पाण्डव ॥५५॥

अर्थात् ''हे अर्जुन! जो पुरुष केवल मेरे ही लिए सम्पूर्ण कर्तव्य-कर्मों को करनेवाला है, मेरे परायण है, मेरा भक्त है, आसक्तरहित है (और) सम्पूर्ण भूतप्राणियों में वैरभाव से रहित है, वह (अनन्य भक्तियुक्त पुरुष) मुझको (ही)प्राप्त होता है।''

अध्याय ४ में वर्णित है –

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन् ।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया ॥६॥
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥७॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे ॥८॥

अर्थात ''मैं अजन्मा (और) अविनाशीस्वरूप होते हुए भी (तथा) समस्त प्राणियों का ईश्वर होते हुए भी अपनी प्रकृति को अधीन करके अपनी योगमाया से प्रकट होता हूँ। हे भारत! जब-जब धर्म की हानि (और) अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ। साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करनेवालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए (मैं) युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ।''

इन श्लोकों में साफ़ तौर पर गीता के श्री कृष्ण ने स्वयं के ईश्वर होने का दावा किया है। दूसरी ओर भागवत पुराण इन्हीं कृष्ण जी को इस शक्ल में पेश करता है कि वे नहाते में गोपियों के कपड़े छुपा लेते हैं[१], जब शुकदेव ऋषि से राजा परीक्षित पूछता है कि ''भगवान तो अवतार इसलिए लेता है कि सच्चा धर्म फैलाए। फिर यह कैसा भगवान है कि धर्म के सारे सिद्धान्तों के ख़िलाफ़ पराई औरतों से अवैध सम्बन्ध रखता है?'' तो ऋषि को यह आपत्ति दूर करने के लिए इस हीले की आड़ में पनाह लेनी पड़ती है कि ''ख़ुद देवता भी किसी समय नेकी की राह से हट जाते हैं। उनके पाप उनके व्यक्तित्व पर इस तरह असर नहीं करते जिस तरह आग सारी चीज़ों को जलाने के बावजूद अपराधी नहीं हो सकती।''[१]

कोई गम्भीर और बुद्धिमान व्यक्ति यह विश्वास नहीं कर सकता कि किसी ऊँचे दर्जे के धार्मिक शिक्षक की ज़िन्दगी ऐसी हो सकती है और न वह यही सोच सकता है कि किसी सच्चे धर्म-प्रवर्तक ने वास्तव में अपने-आपको इंसानों के और सृष्टि के पालनहार के रूप में पेश किया होगा। क़ुरआन और बाइबल के तुलनात्मक अध्ययन से यह सच्चाई खुलकर हमारे सामने आ जाती है कि लोगों ने अपनी मानसिक गिरावट और नैतिक पतन के दौर में संसार के पवित्र और श्रेष्ट व्यक्तियों की जीवनी को एक ओर किस तरह गन्दी शक्ल में ढाल दिया है, ताकि ख़ुद अपनी कमज़ोरियों और बुराइयों को सही ठहराने की दलील पेश कर सकें और दूसरी ओर इन महान पुरुषों के बारे में तरह-तरह के भ्रम फैलाने और सन्देह पैदा करनेवाले क़िस्से और कहानियाँ गढ़ लीं। इसलिए हम समझते हैं कि यही सब कृष्ण जी के साथ भी हुआ होगा और उनकी मूल शिक्षा और वास्तविक व्यक्तित्व इससे बिलकुल भिन्न होगा, जैसा हिन्दुओं की धार्मिक पुस्तकें उन्हें प्रस्तुत करती हैं।

जिन महापुरुषों का ईशदूत होना मालूम और साबित है, उनमें से सबसे बढ़कर ज़ुल्म हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) पर किया गया है। हज़रत ईसा (अलै.) वैसे ही एक इंसान थे, जैसे सब इंसान होते हैं। मनुष्यता की सभी विशेषताएँ उनमें भी उसी तरह थीं जिस तरह इंसानों में मौजूद होती हैं। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना था कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने उनको अपना पैग़म्बर (संदेशवाहक) बनाया था, उन्हें ज्ञान, विवेक और बुद्धि प्रदान की थी। उन्हें चमत्कार की शक्ति देकर एक बिगड़ी हुई जाति के सुधार के लिए नियुक्त किया था। लेकिन एक तो उनकी जाति ने उनको झुठलाया और पूरे तीन साल भी उनके पवित्र वुजूद को बर्दाश्त न कर सकी, यहाँ तक कि ठीक जवानी में उनकी हत्या करने का भी फ़ैसला कर लिया। फिर जब उसने उनके बाद उनकी महिमा और बड़ाई को मान लिया तो इतने आगे बढ़ गए कि उनको ईश्वर का बेटा ही नहीं बल्कि ईश्वर ही बना दिया और यह धारणा उनसे जोड़ी कि ईश्वर मसीह की शक्ल में इसलिए आया था ताकि सूली पर चढ़कर इंसानों के गुनाहों का प्रायश्चित करे, क्योंकि उनके ख़याल में मनुष्य स्वाभाविक रूप से गुनाहगार था और ख़ुद अपने आचरण से अपने लिए नजात हासिल न कर सकता था। एक सच्चा पैग़म्बर अपने पालनहार पर इतना बड़ा झूठ और लांछन कैसे लगा सकता था? परन्तु उसके माननेवालों ने श्रद्धा के जोश में उसपर यह झूठ और लांछन लगाया। और उनकी शिक्षाओं में अपनी इच्छा के मुताबिक़ इतना फेरबदल कर दिया कि आज (क़ुरआन को छोड़ कर) संसार के किसी भी ग्रंथ में हज़रत ईसा (अलै.) की सही शिक्षा और ख़ुद उनकी हक़ीक़त का निशान नहीं मिलता। न्यू टेस्टामेंट में जो किताबें चार इंजीलों के नाम से पाई जाती हैं, उन्हें उठाकर देख जाइए, सब हज़रत ईसा (अलै.) को ईश्वर का अवतार, ईश्वर का बेटा या उसके ख़ुद ईश्वर होने की ग़लत कल्पनाओं से भरी पड़ी हैं। कहीं हज़रत मरियम (अलै.)को ख़ुशख़बरी दी जाती है कि तेरा बेटा ईश्वर का बेटा कहलाएगा (लूक़ा १:३५)। कहीं ईश्वर की आत्मा कबूतर की तरह हज़रत ईसा (अलै.) पर उतरकर आती है और पुकारकर कहती है कि यह मेरा प्यारा बेटा है (मत्ती १६:१७)। कहीं हज़रत ईसा (अलै.) ख़ुद कहते हैं कि मैं ईश्वर का बेटा हूँ और तुम मुझ को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे देखोगे (मरक़स १४:६२)। कहीं प्रलय के बाद बदला मिलने के दिन ईश्वर के स्थान पर मसीह को सिंहासन पर बैठाया जाता है और वह कर्मों के मुताबिक़ सज़ा या इनाम का फ़ैसला करता है। (मत्ती २५:३१-४६)। कहीं मसीह के मुँह से कहलवाया जाता है कि बाप मुझ में है और मैं बाप में हूँ (यूहन्ना १०:३८)। कहीं इस सदा सच बोलनेवाले व्यक्ति के मुँह से ये ग़लत शब्द निकलवाये जाते हैं कि ''मैं ख़ुदा में से निकलकर आया हूँ।'' (यूहन्ना ८:४२) कहीं उसको और ईश्वर को बिलकुल एक कर दिया जाता है और उससे यह बात जोड़ी जाती है कि ''जिसने मुझे देखा, उसने बाप को देखा और बाप मुझमें रहकर अपने काम करता है।''(यूहन्ना १४:१०९)। कहीं ईश्वर की सभी चीज़ें मसीह को हस्तांतरित कर दी जाती हैं (यूहन्ना ३:३५)। और ईश्वर अपना ईश्वरत्व का सारा कारोबार मसीह के सुपुर्द कर देता है। (यूहन्ना ५:२० २२)।

इन विभिन्न क़ौमों ने अपने धार्मिक पेशवाओं और रहनुमाओं पर जितने झूठ और लांछन लगाए हैं उनका मूल कारण वही बात को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने और अतिरंजन का स्वभाव है, जिसका ज़िक्र हमने शुरू में किया है। फिर इस ख़राबी को जिस चीज़ से सबसे अधिक मदद मिली, वह यह थी कि इन महापुरुषों और बुज़ुर्गों के बाद आम तौर से उनकी शिक्षाओं और हिदायतों को लिखा ही नहीं गया। अत: थोड़ा समय बीतने पर उसमें इतनी मिलावट और इतना फेरबदल हो गया कि असली और नक़ली में फ़र्क़ करना असंभव हो गया। इस तरह कोई स्पष्ट आदेश न होने का नतीजा यह हुआ कि जितना-जितना समय बीतता गया, हक़ीक़त पर अन्धविश्वास छाता चला गया। कुछ सदियों में सारी सच्चाइयाँ गुम हो गईं। सिर्फ़ झूठी कहानियाँ ही बाक़ी रह गईं।

दुनिया के सारे रहनुमाओं में यह विशिष्टता केवल हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) को हासिल है कि आपकी शिक्षा और आपका व्यक्तित्व चौदह सौ वर्षों से बिलकुल अपने वास्तविक रूप में सुरक्षित है और ईश्वर की कृपा से ऐसा इन्तिज़ाम हो गया है कि अब इसका बदलना एकदम असंभव है। इंसान के अन्धविश्वास और उसकी अद्भुतप्रियता से यह कुछ दूर भी न था कि वह इन महापुरुष को भी, जो

परिपूर्णता के सबसे ऊँचे दर्जे पर पहुँचे हुए थे, गप और झूठ की कहानियाँ बनाकर ईश्वरत्व से किसी न किसी तरह से जोड़ देती और उसका आज्ञापालन करने के बजाय केवल एक चमत्कार, पूजा और बन्दगी का विषय बना लेती। परन्तु ईश्वर को अपने पैग़म्बरों के भेजने के अन्तिम चरण में एक ऐसा रहनुमा और मार्गदर्शक भेजना था, जिसका व्यक्तित्व इंसानों के लिए शाश्वत आदर्श तथा विश्वव्यापी पथ-प्रदर्शन का स्रोत हो। इसलिए उसने अब्दुल्लाह के सुपुत्र हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के अस्तित्व को उस ज़ुल्म से बचाये रखा, जो जाहिल श्रद्धालुओं के हाथों दूसरे पैग़म्बरों और रहनुमाओं के साथ होता रहा। पहली बात तो यही कि आप के साथियों (सहाबा) और उनके बाद के अनुयायियों (ताबेईन) तथा उनके बाद के मुहद्दिसीन (हदीस के विद्वानों) ने पिछले समुदायों के ठीक विपरीत अपने नबी (सल्ल.) के जीवन-चरित्र को सुरक्षित रखने का ख़ुद ही ग़ैरमामूली इन्तिज़ाम किया है, जिसकी वजह से हम पैग़म्बर (सल्ल.) के व्यक्तित्व को चौदह सौ साल गुज़र जाने पर भी आज लगभग उतने ही क़रीब से देख सकते हैं, जितने क़रीब से ख़ुद आप (सल्ल.) के समय में लोग देख सकते थे। अगर किताबों का वह सभी ज़ख़ीरा संसार से मिट जाए जो इस्लाम के विद्वानों ने वर्षों की कोशिशों से इकट्ठा किया था, हदीस और जीवन-चरित्र का एक पन्ना भी संसार में न रहे, जिससे हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) की ज़िन्दगी का कुछ हाल मालूम हो सकता हो, लेकिन सिर्फ़ अल्लाह की किताब (क़ुरआन) ही बाक़ी रह जाए, तब भी हम इस किताब (पवित्र क़ुरआन) से उन सभी बुनियादी सवालों का जवाब प्राप्त कर सकते हैं जो उसके लानेवाले के सम्बन्ध में किसी के मन में पैदा हो सकते हैं।

आइए अब हम देखें कि क़ुरआन अपने लानेवाले को किस रूप में पेश करता है—

(१) पवित्र क़ुरआन ने ईशदूतत्व (रिसालत) के बारे में सबसे पहले जिस सवाल को बहुत ही साफ़ तौर से खोल-खोल कर बयान किया है, वह पैग़म्बर का इंसान होना है। क़ुरआन के अवतरित होने से पहले सदियों की धारणाओं ने यह एक तयशुदा चीज़ बना दी थी कि इंसान कभी भी ईश्वर का पैग़म्बर और प्रतिनिधि नहीं बन सकता। संसार के सुधार के लिए जब कभी ज़रूरत होती है, ईश्वर ख़ुद ही इंसान की शक्ल में प्रगट होता है या किसी फ़रिश्ते अथवा देवता को भेज देता है और यह कि दुनिया में जितने महापुरुष सुधार के लिए आए हैं वे सब-के-सब इंसानियत से ऊंची हस्ती थे। यह धारणा मनुष्य के अन्दर इतनी रच-बस गई थी कि जब कभी ईश्वर का कोई नेक बन्दा लोगों को ईश्वर का कोई सन्देश पहुँचाने के लिए आता, तो सबसे पहले लोग हैरत से पूछते थे कि यह कैसा पैग़म्बर है, जो हमारी तरह खाता-पीता, सोता और चलता-फिरता है? यह कैसा पैग़म्बर है जिसे हमारी तरह तमाम इंसानी ज़रूरतें पेश आती हैं? यह बीमार होता है, सुख-दुख झेलता है, ख़ुशी और ग़म से प्रभावित होता है? यदि ईश्वर हमारी रहनुमाई करना चाहता, तो वह हम जैसा एक कमज़ोर इंसान क्यों भेजता? क्या ईश्वर ख़ुद नहीं आ सकता था? ये सवाल हर पैग़म्बर के आने पर उठते थे और इन्हीं बातों की दलील देकर ये लोग पैग़म्बरों का इंकार किया करते थे। हज़रत नूह (अलै.) जब अपनी जाति की ओर सन्देश लेकर आये, तो कहा गया—

> ''यह व्यक्ति इसके सिवा कुछ नहीं है कि तुम ही जैसा एक इंसान है, जो तुमपर श्रेष्टता और बड़ाई हासिल करना चाहता है; वरना अगर ईश्वर चाहता तो फ़रिश्तों को उतारता। यह अनोखी बात तो हमने अपने बाप-दादा से कभी सुनी ही न थी (कि इंसान ईश्वर का पैग़म्बर बनकर आए)।'' (क़ुरआन – २३:२४)

हज़रत हूद (अलै.) अपनी जाति की ओर पथ-प्रदर्शन के लिए भेजे गए, तो उनपर भी सबसे पहले यही आपत्ति हुई –

> ''यह व्यक्ति इसके सिवा कुछ नहीं कि एक इंसान है, तुम ही जैसा, वही कुछ खाता है जो तुम खाते हो, वही कुछ पीता है जो तुम पीते हो। अगर तुमने अपने जैसे एक मनुष्य का आज्ञापालन किया तो बड़े टोटे में रहोगे।'' (क़ुरआन – २३:३३-३४)

जब हज़रत मूसा और हारून (अलै.) फ़िरऔन के पास सच्चाई का संदेश लेकर पहुँचे, तो उनकी बात मानने से भी इसी आधार पर इंकार कर दिया गया –

> ''क्या हम अपने ही जैसे दो व्यक्तियों पर ईमान ले आए।'' (क़ुरआन – २३:४७)

इस प्रकार ठीक यही सवाल उस समय भी उठा, जब मक्का के एक उम्मी (निरक्षर) व्यक्ति ने चालीस वर्ष तक ख़ामोश ज़िन्दगी बिताने के बाद अचानक ऐलान किया कि मैं ईश्वर की ओर से पैग़म्बर बनाया गया हूँ। लोगों की समझ में यह बात न आती थी कि एक व्यक्ति जो हमारी तरह हाथ, पाँव, आँख, नाक, जिस्म और जान रखता है कैसे ईश्वर का पैग़म्बर हो सकता है। वे हैरान होकर पूछते थे कि –

> ''यह कैसा पैग़म्बर है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है? क्यों न इसपर कोई फ़रिश्ता उतरा कि उसके साथ

रहकर लोगों को डराता? या कम-से-कम उसके लिए कोई ख़ज़ाना ही उतारा जाता या इसके पास कोई बाग़ होता जिसके फल यह खाता।'' (क़ुरआन – २५:७-८)

यह ग़लतफ़हमी चूँकि ईशदूतत्व को मान लिए जाने में सबसे अधिक बाधक हो रही थी, इसलिए क़ुरआन में पूरे ज़ोर के साथ इसका खंडन किया गया और दलीलों के साथ बताया गया कि इंसान को सच्ची राह दिखाने के लिए इंसान ही अधिक उपयुक्त हो सकते हैं, क्योंकि पैग़म्बर भेजने का मक़सद सिर्फ़ शिक्षा ही देना नहीं है बल्कि उसे ख़ुद व्यवहार में लाकर दिखाना और अनुकरण के लिए एक नमूना पेश करना भी है। इस उद्देश्य के लिए अगर फ़रिश्ता या और कोई अलौकिक हस्ती भेजी जाए, जिसमें इंसानी विशेषताएँ और ज़रूरतें मौजूद न हों, तो इंसान कह सकता है कि हम उसकी तरह कैसे अमल कर सकते हैं, जबकि वह हमारी तरह आत्मा और मनोइच्छाएँ ही नहीं रखता और उसकी प्रकृति (फ़ितरत) में वे शक्तियाँ ही नहीं पाई जातीं जो लोगों को गुनाह की तरफ़ ले जाती हैं। क़ुरआन में है–

''अगर धरती में फ़रिश्ते इत्मीनान से चल-फिर रहे होते तो अलबत्ता हम भी उनपर आसमान से किसी फ़रिश्ते ही को सन्देष्टा (पैग़म्बर) बनाकर उतारते।''
(क़ुरआन-१७:९५)

फिर साफ़ तौर पर व्याख्या की गई कि इससे पहले जितने पैग़म्बर और मार्गदर्शक विभिन्न जातियों में भेजे गए हैं, वे सब ऐसे ही इंसान थे जैसे हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) हैं और उसी प्रकार खाते-पीते और चलते-फिरते थे, जिस प्रकार हर इंसान खाता-पीता और चलता-फिरता है। क़ुरआन मजीद में कहा गया है–

''हमने तुमसे पहले जिन लोगों को भेजा था, वे भी इंसान ही थे, जिनपर हम 'वह्य' (प्रकाशना) भेजते थे। अगर तुम नहीं जानते तो ज्ञान रखनेवालों से पूछ लो। हमने उन पैग़म्बरों को ऐसे शरीर नहीं दिए थे कि वे खाना न खाते हों और न वे सदैव जीनेवाले थे।'' (क़ुरआन-२१:७,८)

''और हमने तुमसे पहले जितने भी पैग़म्बर भेजे, वे सब खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते-फिरते थे।'' (क़ुरआन-२५:२०)

''और हमने तुमसे पहले भी बहुत से पैग़म्बर भेजे थे और उनके लिए हमने पत्नियाँ भी पैदा कीं और उनको औलाद भी दी थी।'' (क़ुरआन-१३:३८)

इसके बाद हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) को हुक्म दिया गया कि तुम अपने इंसान होने का साफ़ ऐलान करो ताकि आपके बाद लोग आपको भी उसी तरह ईश्वरत्व से न जोड़ने लगें, जिस तरह आप से पहले दूसरे पैग़म्बरों के साथ कर चुके थे। इसलिए क़ुरआन में अनेक स्थानों पर यह आयत आई है –

''ऐ पैग़म्बर! कह दो कि मैं तो केवल तुम ही जैसा एक इंसान हूँ, मुझ पर 'वह्य' की जाती है कि तुम्हारा ईश्वर एक ही ईश्वर है।'' (क़ुरआन-१८:११०)

इन व्याख्याओं ने केवल हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ही के बारे में तमाम ग़लत धारणाओं का दरवाज़ा बन्द नहीं किया, बल्कि पहले के सभी पैग़म्बरों और धार्मिक पेशवाओं के बारे में भी इस ग़लतफ़हमी को दूर कर दिया।

(२) दूसरी चीज़ जिसको पवित्र क़ुरआन में बहुत ही स्पष्ट रूप से बयान किया गया है, वह पैग़म्बर की शक्ति और सामर्थ्य की बात है। अज्ञानता और नादानी की वजह से जब लोगों ने ख़ुदा के नेक, सदाचारी और परहेज़गार बन्दों को ईश्वर के बराबर या ईश्वर ही बना डाला, तो स्वाभाविक रूप से यह धारणा भी पैदा हो गई कि ईश्वर के ऐसे नेक बन्दों में ग़ैर-मामूली शक्तियाँ होती हैं। ईश्वर के कारख़ाने में उनको कुछ ख़ास अधिकार प्राप्त होते हैं। कर्मों का बदला देने में उनको दख़ल देने का अधिकार होता है और ढकी-छुपी सभी चीज़ों की उन्हें जानकारी होती है। क़िस्मत के फ़ैसले उनकी मर्ज़ी और राय से अदलते-बदलते हैं। फ़ायदा या नुक़्सान पहुँचाने की उन्हें ताक़त हासिल होती है। भलाई और बुराई के वे मालिक होते हैं। जगत् की सारी शक्तियाँ उनके अधीन होती हैं और वे एक नज़र में लोगों के दिलों को बदलकर उनकी गुमराही और अंधकार को दूर कर सकते हैं। ऐसे ही विचार थे, जिनके आधार पर लोग ख़ुदा के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) से भी अजीब-अजीब मांग किया करते थे। अत: क़ुरआन में कहा गया है–

''उन्होंने कहा, हम तो तुमपर हरगिज़ ईमान न लायेंगे, जब तक तुम हमारे लिए धरती में से एक स्रोत न निकाल दो या तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ पैदा हो और उसमें तुम नहरें पैदा कर दो। या जैसा कि तुम कहा करते हो, आकाश को टुकड़े-टुकड़े करके हमपर गिरा दो या ईश्वर और फ़रिश्तों को हमारे सामने ला खड़ा करो या तुम्हारे लिए सोने का एक घर बन जाए या तुम आकाश पर चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ने पर भी उस वक़्त तक यक़ीन न करेंगे जब तक कि तुम हमारे ऊपर ऐसा एक लेख न उतारो जिसे हम पढ़ें। ऐ पैग़म्बर! इनसे कहो! पवित्र है मेरा पालनहार। मैं इसके सिवा और क्या कहूँ कि इंसान हूँ, जिसे पैग़म्बर बनाया गया है।'' (क़ुरआन-१७:९०-९३)

ईश्वर प्राप्ति और बुज़ुर्गी के विषय में जितनी ग़लत कल्पनाएं लोगों में पाई जाती हैं, ईश्वर ने उन सबका खण्डन कर दिया और साफ़ बता दिया कि पैग़म्बर का ईश्वरीय शक्ति और ईश्वरीय काम में ज़रा-सा भी योगदान नहीं है। अत: कहा कि पैग़म्बर हमारी इजाज़त के बिना दूसरों को नुक़सान से बचाना तो अलग रहा, ख़ुद अपने आपको नुक़सान से सुरक्षित रखने की भी सामर्थ्य नहीं रखते –

''ऐ पैग़म्बर! अगर ईश्वर तुम्हें कोई नुक़सान पहुँचाए, तो उसके सिवा कोई उस नुक़सान को दूर करनेवाला नहीं है और वह तुम्हारे साथ कोई भलाई करना चाहे, तो वह हर चीज़ की सामार्थ्य रखता है।''

(क़ुरआन-६:१७)

''ऐ पैग़म्बर! कहो, मैं तो अपने ख़ुद के लिए भी फ़ायदा या नुक़सान की सामर्थ्य नहीं रखता, सिवाय इसके कि जो ईश्वर चाहे।'' (क़ुरआन-१०:४९)

और कहा कि पैग़म्बर के पास ईश्वर के ख़ज़ानों की कुंजियाँ नहीं हैं और न वह परोक्ष का ज्ञान रखता है और न उसे अस्वाभाविक शक्तियाँ प्राप्त हैं। क़ुरआन में है –

''(ऐ पैग़म्बर)! कहो, मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास ईश्वर के ख़ज़ाने हैं। न मैं परोक्ष का हाल जानता हूँ और न मैं तुमसे यही कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ (यानी इंसानी ज़रूरतों से रहित हूँ) मैं तो सिर्फ़ उस चीज़ का आज्ञापालन करता हूँ, जो मुझे 'वह्य' (प्रकाशना) द्वारा दी जाती है।'' (क़ुरआन-६:५०)

''और अगर मैं परोक्ष का ज्ञान रखनेवाला होता तो अपने लिए बहुत-से फ़ायदे समेट लेता और मुझको कोई नुक़सान न पहुँचता। मैं तो सिर्फ़ एक ख़बरदार करनेवाला हूँ। और जो मेरी बात मान ले उनको ख़ुशख़बरी देनेवाला हूँ।'' (क़ुरआन-७:१८८)

और कहा कि पैग़म्बर को हिसाब-किताब और कर्मों का बदला देने में भी दख़ल का कोई अधिकार नहीं। उसका काम केवल पैग़ाम पहुँचाना और सीधी राह बता देना है। आगे पूछ- ताछ तथा पकड़ करना और लोगों को सज़ा या इनाम देना ईश्वर का काम है। क़ुरआन में है –

''(ऐ पैग़म्बर!) इन लोगों से कहो कि मैं अपने रब की ओर से स्पष्ट दलील पर हूँ और तुमने उसे झुठला दिया है। अब यह बात मेरे अधिकार में नहीं है कि जिस प्रकोप के लिए तुम जल्दी मचा रहे हो, वह मैं ख़ुद तुम्हारे ऊपर उतार दूँ। फ़ैसला बिलकुल ईश्वर के हाथ में है। वही सच्ची बात बयान करता है और वही बेहतरीन फ़ैसला करनेवाला है। इनसे कहो कि यदि कहीं वह प्रकोप मेरे अधिकार में होता, जिसके लिए तुम जल्दी मचा रहे हो, तो मेरे और तुम्हारे बीच कभी का फ़ैसला हो चुका होता। मगर ईश्वर ही अत्याचारियों से अच्छी तरह निपटना जानता है।''

(क़ुरआन-६:५७-५८)

''(ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारा काम तो बस सन्देश पहुँचा देना है, हिसाब लेना हमारा काम है।''

(क़ुरआन-१३:४०)

''(ऐ पैग़म्बर!) हमने लोगों की रहनुमाई के लिए तुम पर यह किताब सच्चाई के साथ उतारी है। अब जो कोई सन्मार्ग ग्रहण करता है, अपने ही लिए अच्छा करता है और जो गुमराही में पड़ता है, अपने ही हक़ में बुरा करता है और तुम उनपर कोई

हवालेदार नहीं हो।''   (क़ुरआन-३९:४१)

और कहा कि लोगों के दिलों को फेर देना और जो लोग सच्चाई स्वीकार करने को तैयार न हों, उनमें ईमान पैदा कर देना पैग़म्बर के वश की बात नहीं है। वह रहनुमा केवल इस अर्थ में है कि उपदेश देने और सावधान करने का जो उसका कर्तव्य है, उसका वह पूरी तरह पालन कर देता है और जो रास्ता देखना चाहे, उसे रास्ता दिखा देता है। क़ुरआन में कहा गया है–

''तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों तक आवाज़ पहुँचा सकते हो जबकि वे पीठ फेरकर लौट जाएँ और न तुम अन्धों को गुमराही से निकाल कर सीधे रास्ते पर डाल सकते हो। तुम तो सिर्फ़ उन्हीं लोगों को सुना सकते हो जो हमारी निशानियों पर ईमान लाते हैं। फिर आज्ञाकारी हो जाते हैं।''
(क़ुरआन-२७:८०-८१)

''तुम क़ब्र के मुर्दों को सुनानेवाले नहीं हो। तुम तो केवल आगाह कर देनेवाले हो और हमने तुमको सत्य के साथ ख़ुशख़बरी देनेवाला और डरानेवाला बनाकर भेजा है।''   (क़ुरआन-३५:२२-२४)

फिर यह भी साफ़ बता दिया गया कि पैग़म्बर को जो कुछ आदर, सम्मान तथा ऊंचा दर्जा प्राप्त है, वह सब इस कारण है कि वह ईश्वर का आज्ञापालन करता है, उसके आदेशों पर ठीक-ठीक चलता है और जो कुछ वाणी उसपर उतारी जाती है, उसे ज्यों का त्यों ईश्वर के बन्दों तक पहुँचा देता है। अन्यथा अगर वह आज्ञापालन से मुँह मोड़े और ईश्वर की वाणी में अपने मन से गढ़कर बातें मिला दे, तो उसकी कोई प्रधानता बाक़ी नहीं रहती। क़ुरआन में है–

''और अगर तुमने उनकी इच्छाओं का अनुसरण किया, उस ज्ञान के होते हुए जो तुम्हारे पास आ गया है, तो अवश्य ही इस अवस्था में तुम अन्यायी होगे।''
(क़ुरआन-२:१४५)

''और यदि तुमने उस ज्ञान के बावजूद जो तुम्हारे पास आया है, उनकी इच्छाओं का अनुसरण किया तो तुम्हें ईश्वर की सज़ा से बचानेवाला कोई समर्थक और मददगार न होगा।''   (क़ुरआन-२:१२०)

''(ऐ पैग़म्बर!) उनसे कहो, मुझको इस वाणी में अपनी ओर से कुछ फेरबदल करने का अधिकार नहीं है। मैं तो केवल उस चीज़ का अनुसरण करता हूँ जो मुझ पर 'वह्य' की जाती है। अगर मैं अपने पालनहार की अवज्ञा करूं तो मुझे एक बड़े दिन के प्रकोप का डर है।''   (क़ुरआन-१०:१५)

ये बातें इसलिए नहीं कही गईं कि प्यारे नबी (सल्ल.) से किसी अवज्ञा या अल्लाह की वाणी में किसी प्रकार के फेरबदल का ज़रा-सा भी अन्देशा था। दरअसल इन आयतों का मक़सद संसार पर यह हक़ीक़त स्पष्ट करना था कि नबी को ईश्वर की जो निकटता और सामीप्य प्राप्त है, उसकी वजह यह नहीं है कि पैग़म्बर से ईश्वर की नातेदारी है बल्कि इसकी निकटता का कारण यह है कि वह ईश्वर का अत्यन्त आज्ञाकारी और दिलो-जान से उसका बन्दा है।

(३) तीसरी बात जिसका बार-बार पवित्र क़ुरआन में काफ़ी विस्तार से ज़िक्र किया गया है, यह है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) कोई नये पैग़म्बर नहीं हैं, बल्कि पैग़म्बरों के क्रम का एक व्यक्ति और एक कड़ी है जो शुरूसे लेकर आप की नियुक्ति तक जारी रहा। और जिसमें हर क़ौम और ज़माने के पैग़म्बर शामिल हैं। क़ुरआन पैग़म्बरी (ईशदूतत्व) को किसी एक व्यक्ति, या किसी एक देश या एक जाति के लिए ख़ास नहीं करता, बल्कि वह साफ़-साफ़ ऐलान करता है कि ईश्वर ने हर जाति, हर देश और हर ज़माने में ऐसे पुण्यात्मा लोग पैदा किए हैं, जिन्होंने इंसान को सत्य-मार्ग की ओर बुलाया है और गुमराही के बुरे नतीजों से डराया है। क़ुरआन में है–

''कोई क़ौम ऐसी नहीं गुज़री है जिसमें कोई सचेत करनेवाला न आया हो।''
(क़ुरआन-३५:२४)

''और हमने हर क़ौम में एक पैग़म्बर भेजा जिसने सन्देश दिया कि ईश्वर की बन्दगी करो तागूत (शैतान) की बन्दगी से बचो।''
(क़ुरआन-१६:३६)

इन्हीं पैग़म्बरों और सावधान करनेवालों में से एक हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) भी हैं। इसलिए क़ुरआन में अनेक स्थानों पर आता है –

''यह एक डरानेवाला है, अगले डरानेवालों में से।'' (क़ुरआन-५३:५६)

''ऐ मुहम्मद! निस्संदेह तुम पैग़म्बरों में से हो।'' (क़ुरआन-३६:३)

''ऐ मुहम्मद! कहो, मैं कोई निराला पैग़म्बर नहीं हूँ। मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या व्यवहार किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या सुलूक होगा? मैं तो उस चीज़ का अनुसरण करता हूँ जो मुझ पर 'वह्य' की जाती है और मैं केवल एक सावधान करनेवाला हूँ, खुल्लम -खुल्ला। (क़ुरआन-४६:९)

''मुहम्मद कुछ नहीं हैं मगर एक रसूल और इनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं।'' (क़ुरआन-३:१४४)

यही नहीं बल्कि यह भी कह दिया कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) का संदेश वही संदेश है, जिसकी ओर शुरू से हर पैग़म्बर बुलाता रहा है और आप (सल्ल.) उसी प्राकृतिक धर्म का उपदेश देते रहे, जिसका उपदेश ईश्वर के हर पैग़म्बर ने हमेशा दिया है। क़ुरआन में कहा गया –

''कहो हम ईमान लाए ईश्वर पर और उस शिक्षा पर जो हमारी ओर उतारी गयी है और उस शिक्षा पर जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़, याक़ूब और उनकी संतान पर उतारी गई थी और जो मूसा, ईसा और दूसरे नबियों को उनके पालनहार की ओर से दी गयी थी। हम उनके बीच फ़र्क़ (भेदभाव) नहीं करते और हम ईश्वर के आज्ञाकारी हैं। अत: अगर ये लोग भी उसी प्रकार ईमान ले आएँ जिस प्रकार तुम लाए हो तो वे सीधे रास्ते पर हैं।'' (क़ुरआन-२:१३६-१३७)

पवित्र क़ुरआन का यह स्पष्टीकरण इस हक़ीक़त में किसी सन्देह की गुंजाइश नहीं छोड़ता कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) पिछले पैग़म्बरों में से किसी को झुठलाने या किसी के लाये हुए सन्देश का खण्डन करने के लिए नहीं आए थे, बल्कि इसलिए आए थे कि उसी सत्य-धर्म को, जो पहले दिन से सभी क़ौमों के पैग़म्बर पेश करते चले आए थे, बाद के लोगों की मिलावटों से पाक करके उसे फिर पेश कर दें।

(४) इस तरह पवित्र क़ुरआन अपने लानेवाले की सही हैसियत बयान करने के बाद उन कामों का ब्योरा देता है, जिनके लिए ईश्वर ने उसे भेजा था।

ये काम सामान्य रूप से दो विभागों से संबन्ध रखते हैं – एक का संबन्ध शिक्षा से है और दूसरे का कर्म से।

पहले विभाग के काम ये हैं –

१. क़ुरआन मजीद की आयतों का पढ़ना, मन का शुद्धिकरण, किताब एवं हिकमत की शिक्षा। क़ुरआन में है–

''वास्तव में ईमान लानेवाले लोगों पर अल्लाह का बड़ा एहसान है कि उसने उनके बीच ही में से एक ऐसा पैग़म्बर उठाया जो उन्हें उसकी आयतें सुनाता है और उनकी आत्मशुद्धि करता है और उन्हें ग्रन्थ एवं विवेक की शिक्षा देता है वरना इससे पहले तो वे खुली गुमराही में पड़े हुए थे।'' (क़ुरआन-३:१६४)

आयतों के पाठ का मतलब ईश्वर के आदेश और उपदेश को ज्यों का त्यों सुना देना है। आत्मशुद्धि का तात्पर्य यह है कि लोगों के आचार और उनके जीवन को बुरी चीज़ों, बुरी आदतों और बुरे तरीक़ों से पाक किया जाए और उनके अन्दर सद्गुण, शिष्टाचार और पवित्र नैतिक गुणों को विकसित किया जाए। किताब और हिकमत की शिक्षा यह है कि लोगों को ईश्वर की किताब का सही मंशा और मतलब समझाया जाए। उनके भीतर ऐसा ज्ञान और दूरदर्शिता पैदा की जाए कि वे क़ुरआन की असल रूह तक पहुँच सकें और उन्हें वह हिकमत सिखाई जाए, जिससे वे अपनी ज़िन्दगी के सभी पहलुओं को ईश्वरीय किताब के मुताबिक़ ढालते और विकसित करते चले जाएँ।

२. धर्म की पूर्ति –

''आज मैने तुम्हारे धर्म को तुम्हारे लिए पूरा कर दिया। और तुम पर अपनी नेमत (निधि) की पूर्ति कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम के तरीक़े को पसन्द किया।''

(क़ुरआन-५:३)

दूसरे शब्दों में क़ुरआन के भेजने वाले ने उसके लाने वाले से केवल यही सेवा नहीं ली कि वह उसकी आयतों का पाठ करे, मन का शुद्धिकरण करे और ग्रन्थ एवं हिकमत की शिक्षा दे, बल्कि उसने अपने इसी नेक बन्दे द्वारा इस काम को पूरा कराया जो आयतें मानवजाति तक भेजनी थीं वे सब उसके ज़रिए भेज दीं। जिन ख़राबियों से मानव-जीवन को पाक करना था, वे सब उसके हाथों से दूर कराके दिखा दिया, जिन सद्‌गुणों का विकास जिस शान के साथ व्यक्तियों और समाज में होना चाहिए था, उसका बेहतरीन नमूना उसकी रहनुमाई में पेश करा दिया और किताब तथा हिकमत की ऐसी शिक्षा उसके द्वारा दिलवा दी कि आनेवाले सभी कालों में क़ुरआन के मंशा के मुताबिक़ मानव-जीवन का निर्माण किया जा सकता है।

३. उन विभेदों की हक़ीक़त को स्पष्ट करना भी पैग़म्बर का कर्तव्य था जो वास्तविक सत्य-धर्म में पिछले पैग़म्बरों के समुदायों के बीच पैदा हो गए थे और सारे परदों को हटाकर, सारी मिलावट छाँटकर, सारी उलझनें दूर करके उस सन्मार्ग को पूरी रोशनी में ज़ाहिर कर देना, जिस पर चलना हमेशा से ईश्वर को प्राप्त करने का एक ही मार्ग रहा है। क़ुरआन में है–

''ईश्वर गवाह है, हमने (ऐ मुहम्मद !) तुम से पहले विभिन्न समुदायों की ओर आदेश भेजे। मगर उसके बाद शैतान ने उनके ग़लत कर्मों को उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिया। इसलिए आज वही उनका संरक्षक बना हुआ है और वे दर्दनाक प्रकोप के पात्र बन गए हैं और हमने तुम पर यह किताब केवल इसलिए उतारी है कि उस हक़ीक़त को उनके सामने ज़ाहिर कर दो, जिसमें उनके बीच विभेद पाया जाता है और इसलिए कि यह ग्रन्थ निर्देश और दया साबित हो उन लोगों के लिए जो इसका अनुसरण स्वीकार कर लें।'' (क़ुरआन-१६:६३-६४)

''ऐ किताबवालो ! तुम्हारे पास हमारा पैग़म्बर आ गया है जो तुम्हारे सामने बहुत-सी उन चीज़ों को खोलकर बयान करता है, जिन्हें तुम किताब में से छिपाते हो और बहुत-सी बातों को माफ़ कर देता है। तुम्हारे पास ईश्वर की ओर से एक रोशनी और एक खुली हुई किताब आ गई है, जिसके द्वारा ईश्वर उन लोगों को जो उसकी इच्छा के मुताबिक़ चलते हैं, शान्ति का मार्ग दिखाता है और उन्हें अन्धकार से प्रकाश में निकाल लाता है और सन्मार्ग की ओर उनकी रहनुमाई करता है।'' (क़ुरआन-५:१५-१६)

४. अवज्ञाकारियों को चेतावनी देना, आज्ञाकारियों को ईश्वरीय दया की ख़ुशख़बरी देना और ईश्वरीय धर्म का प्रचार करना। क़ुरआन में है–

''ऐ पैग़म्बर ! हमने तुमको गवाह और ख़ुशख़बरी देनेवाला और चेतावनी देनेवाला और ईश्वर की आज्ञा से ईश्वर की ओर आह्वान करनेवाला और एक प्रकाशमान सूर्य बनाकर भेजा है।''

(क़ुरआन-३३:४५-४६)

दूसरा विभाग व्यावहारिक जीवन तथा उसके मामलों से सम्बन्ध रखता है और उसके काम ये हैं –

नेकी का आदेश देना, बुराई से रोकना, हलाल और हराम (वैध-अवैध) की सीमाएं क़ायम करना और इंसान को ईश्वर के अतिरिक्त अन्य की लगाई गई पाबन्दियों से आज़ाद करना और उनके लादे हुए बोझों से हल्का करना। क़ुरआन में है–

''वह उनको नेकी का हुक्म देता है, बुराई से रोकता है, उनके लिए पवित्र वस्तुओं को हलाल (वैध) और अपवित्र को हराम (अवैध) ठहराता है। और उनपर से वह भार उतारता है और उन बंधनों को काटता है, जिनमें वे दबे और जकड़े हुए थे। अत: जो लोग उस पर ईमान लाएँ और उसका समर्थन तथा उसकी सहायता करें और उस प्रकाश का अनुसरण करें जो उसके साथ उतारा गया है, वही सफल होने वाले हैं।'' (क़ुरआन-७:१५७)

ईश्वर के बन्दों के प्रति सच्चाई और इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करना। क़ुरआन में है –

''(ऐ मुहम्मद !) हमने तुम पर सत्य के साथ यह किताब उतारी है ताकि तुम ईश्वर के बताए हुए क़ानूनों के अनुसार लोगों के फ़ैसले करो और ख़यानत करने वालों के वकील न बनो।'' (क़ुरआन-४:१०५)

ईश्वर के धर्म को इस प्रकार क़ायम कर देना कि मानव-जीवन की सारी व्यवस्था इसी के अधीन हो और अन्य सभी

जीवन-व्यवस्थाएं उसकी अपेक्षा दबकर रह जाएँ। क़ुरआन में है–

''वह ईश्वर ही है कि जिसने अपने पैग़म्बर को हिदायत (निर्देश) एवं सत्य-धर्म के साथ भेजा ताकि उसे सभी जीवन-व्यवस्थाओं पर प्रभुत्व प्राप्त करा दे।'' (क़ुरआन-४८:२८)

इस प्रकार पैग़म्बर के काम का यह विभाग राजनीति, न्याय-विधान, नैतिकता और सभ्यता का सुधार तथा सदाचार पर आधारित सभ्यता की स्थापना के सभी पहलुओं पर हावी हो जाता है।

५. हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) का यह काम किसी एक जाति, देश या काल और युग के लिए ख़ास नहीं है बल्कि सारी मानवजाति तथा सभी युगों के लिए आम है। क़ुरआन में है–

''(ऐ मुहम्मद !) हमने तुम को सभी इंसानों के लिए सावधान करनेवाला और ख़ुशख़बरी सुनानेवाला बनाकर भेजा है परन्तु अक्सर लोग नहीं जानते।''
(क़ुरआन-३४:२८)

''(ऐ मुहम्मद !) कहो कि ऐ इंसानो ! मैं तुम सबकी ओर ईश्वर का पैग़म्बर हूँ, उस ईश्वर का जो आकाशों और धरती के राज्य का मालिक है, जिसके अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं, जो मारने और जिलाने वाला है। अत: ईमान लाओ ईश्वर पर और उसके पैग़म्बर 'उम्मी नबी' पर जो ईश्वर और उसके आदेशों पर ईमान रखता है और उसका अनुसरण करो, आशा है कि तुम सन्मार्ग पा लोगे।'' (क़ुरआन-७:१५८)

''(ऐ मुहम्मद !) कहो, और मेरी ओर यह क़ुरआन 'वह्य' (प्रकाशना) किया गया है ताकि मैं इसके द्वारा तुमको चेतावनी दूँ और जिस-जिसको यह पहुँचे।''
(क़ुरआन-६:१९)

''यह (क़ुरआन) तो एक उपदेश है सारे संसार वालों के लिए, हर उस व्यक्ति के लिए, जो तुम में से सत्यवादी बनना चाहे।''
(क़ुरआन-८१:२७-२८)

६. हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के ईशदूतत्व और पैग़म्बरी की एक और विशेषता क़ुरआन हमें यह बताता है कि आप पर ईशदूतत्व तथा सन्देश भेजने का सिलसिला ख़त्म कर दिया गया और आपके बाद संसार को किसी अन्य पैग़म्बर की ज़रूरत न रही। क़ुरआन में है–

''मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं, परन्तु वे ईश्वर के पैग़म्बर और पैग़म्बरों के (क्रम को) समाप्त करनेवाले हैं।'' (क़ुरआन-३३:४०)

यह वास्तव में अनिवार्य नतीजा है हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के ईशदूतत्व और पैग़म्बरी की सर्वव्यापक, सार्वकालिक और धर्म के पूर्ण होने का। चूँकि क़ुरआन के उपर्युक्त वर्णन की दृष्टि से हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) की पैग़म्बरी सारे संसार के इंसानों के लिए है न कि एक क़ौम के लिए। और आप (सल्ल.) के द्वारा वह काम भी पूर्ण हो चुका है, जिसके लिए संसार में पैग़म्बरों के आने की ज़रूरत थी। इसलिए यह बात सर्वथा उचित थी कि आप (सल्ल.) पर पैग़म्बरी के सिलसिले को ख़त्म कर दिया गया। इस विषय को ख़ुद नबी (सल्ल.) ने बेहतरीन अंदाज़ में एक 'हदीस' में स्पष्ट किया है। आप (सल्ल.) कहते हैं कि–

''मेरी मिसाल नबियों में ऐसी है जैसे किसी व्यक्ति ने एक अत्यधिक सुन्दर मकान बनाया और पूरी इमारत बनाकर केवल एक ईंट की जगह छोड़ दी। अब जिन लोगों ने उसके चारों ओर चक्कर लगाया, तो वह ख़ाली जगह उन्हें खटकने लगी और वे कहने लगे कि अगर यह अंतिम ईंट भी रख दी जाती, तो मकान पूर्ण हो जाता। सो वह आख़िरी ईंट जिसकी जगह ईशदूतत्व के महल में बाक़ी रह गयी थी, मैं ही हूँ और अब मेरे बाद कोई पैग़म्बर आनेवाला नहीं है।''

इस मिसाल से पैग़म्बरी के ख़त्म होने का कारण साफ़ समझ में आ जाता है। जब धर्म पूर्ण हो चुका, ईश्वरीय निर्देश एवं उपदेश स्पष्ट रूप से बयान हो चुके, आदेश एवं निषेध, धारणाएं तथा उपासनाएं, संस्कृति और सामाजिकता, शासन एवं राजनीति, सारांश यह कि मानव-जीवन के हर पहलू के विषय में पूरे-पूरे आदेश दे दिए गए और संसार के सामने ईशवाणी और ईश्वर के पैग़म्बर का आदर्श चरित्र इस तरह पेश कर दिया गया कि वह हर प्रकार की मिलावट एवं रद्दोबदल से पाक है और हर ज़माने में इससे रहनुमाई हासिल की जा सकती है,

तो पैग़म्बरी की कोई ज़रूरत बाक़ी नहीं रही। अब सिर्फ़ इस बात की आवश्यकता रह गई है कि ज़रूरत के मुताबिक़ लोगों को याददिहानी करायी जाती रहे और यह काम सत्य-धर्म के विद्वान और उसके सच्चे माननेवाले लोगों का संगठन भली-भाँति कर सकता है।

७. अन्तिम प्रश्न जिसके समाधान की ज़रूरत बाक़ी रह जाती है, वह यह है कि इस ग्रन्थ (क़ुरआन) को लानेवाला व्यक्तिगत रूप में किस आचार का व्यक्ति था?

इस प्रश्न के उत्तर में क़ुरआन ने अन्य प्रचलित ग्रन्थों के समान अपने लानेवाले की प्रशंसा के पुल नहीं बांधे हैं, न उसकी प्रशंसा को वार्तालाप का एक स्थाई विषय बनाया है। अलबत्ता बात-बात में सांकेतिक रूप में हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) की नैतिक विशेषताएँ व्यक्त की हैं, जिनसे अनुमान लगाया जा सकता है कि उस पैग़म्बर (सल्ल.) के व्यक्तित्व में मानव-श्रेष्ठता के बेहतरीन गुण मौजूद थे।

१. वह बताता है कि उसका लानेवाला नैतिकता और सुशीलता की पराकाष्ठा को प्राप्त हो चुका था। क़ुरआन में है–

''(और ऐ मुहम्मद !) निस्संदेह तुम शिष्टाचार के बड़े दर्जे पर हो।'' (क़ुरआन-६८:४)

२. वह बताता है कि उसका लानेवाला एक ऐसा दृढ़-संकल्प, और प्रत्येक अवस्था में ईश्वर पर भरोसा रखनेवाला इंसान था कि जिस समय उसकी पूरी क़ौम उसे मिटा देने पर तुल गई थी और वह केवल अपने एक साथी के साथ एक गुफ़ा में शरण लेने पर मजबूर हुआ था, उस कठिन मुसीबत के समय में भी उसने साहस न छोड़ा और अपने इरादे पर जमा रहा। इस बात को क़ुरआन ने इन शब्दों में बयान किया है–

''याद करो जबकि विधर्मियों ने उसको निकाल दिया था, जबकि वह गुफ़ा में सिर्फ़ एक इंसान के साथ था, जबकि वह अपने साथी से कह रहा था कि शोकाकुल न हो, ईश्वर हमारे साथ है।'' (क़ुरआन-९:४०)

३. वह बताता है कि उसका लानेवाला एक अत्यन्त विशाल-हृदय, उदार और साहसी इंसान था, जिसने अपने बुरे-से-बुरे दुश्मनों के लिए भी मुक्ति और बख़्शिश की दुआ की और अन्ततः ईश्वर को उसे अपना यह अटल फ़ैसला सुना देना पड़ा कि वह उन लोगों को माफ़ नहीं करेगा। क़ुरआन में है–

''चाहे तुम उनके लिए माफ़ी मांगो, चाहे न मांगो यदि तुम सत्तर बार भी उन के लिए माफ़ी मांगोगे तब भी ईश्वर उनको माफ़ न करेगा।'' (क़ुरआन-९:८०)

४. वह बताता है कि उसके लानेवाले का स्वभाव अत्यन्त कोमल और नम्र था। वह कभी किसी के साथ कठोरता का व्यवहार नहीं करता और इसी लिए संसार उसका आसक्त हो गया था। क़ुरआन में है–

''यह ईश्वर की कृपा ही है कि तुम उनके साथ नर्म हो वरना अगर तुम ज़बान के तेज़ और दिल के सख़्त होते तो ये सब लोग तुम्हारे आसपास से छँटकर अलग हो जाते।'' (क़ुरआन-३:१५९)

५. वह बताता है कि उसका लानेवाला ईश्वर के बन्दों को सच्चाई के मार्ग पर लाने की सच्ची तड़प दिल में रखता था। और उनके गुमराही पर जमे रहने से उसके दिल को दुख पहुँचता था, यहां तक कि वह उनके ग़म में घुला जाता था। क़ुरआन ने इसे इस रूप में बयान किया है–

''(ऐ मुहम्मद!) ऐसा मालूम होता है कि अगर वे इस संदेश पर ईमान न लाए, तो तुम उनके पीछे ग़म में अपनी जान खो दोगे।'' (क़ुरआन-१८:६)

६. वह बताता है कि उसके लानेवाले को अपने समुदाय से अत्यन्त प्रेम था, वह उनकी भलाई के लिए व्याकुल था, उनके हानि में पड़ने से कुढ़ता था और उनके लिए साक्षात् दया और करुणा था। क़ुरआन में है–

''तुम्हारे पास स्वयं तुम ही में से एक ऐसा पैग़म्बर आया है जिसे हर वह बात असह्य है जो तुम्हें नुक़्सान पहुँचानेवाली हो, जो तुम्हारी सफलता की लालसा रखता है और ईमान वालों के साथ ममतामय तथा दयाशील है।'' (क़ुरआन-९:१२८)

७. वह बताता है कि उसका लानेवाला केवल अपनी क़ौम ही के लिए नहीं बल्कि सारे संसार के लिए ईश्वर की दया था। क़ुरआन में है–

''(ऐ मुहम्मद!) हमने तुमको सारे संसार के लिए रहमत (दयालुता) बना कर भेजा है।''

(क़ुरआन-२१:१०७)

८. वह बताता है कि उसका लानेवाला रातों को घंटों ईश्वर की उपासना करता और उसकी याद में खड़ा रहता था। क़ुरआन में है–

''(ऐ मुहम्मद!) तुम्हारा पालनहार जानता है कि तुम रात को लगभग दो तिहाई हिस्से तक और कभी आधी रात और कभी एक तिहाई हिस्से तक नमाज़ में खड़े रहते हो।'' (क़ुरआन-७३:२०)

९. वह बताता है कि उसका लानेवाला एक सच्चा इंसान था, न कभी अपने जीवन में सत्य-मार्ग से भटका, न अशुद्ध विचारों से प्रभावित हुआ और न कभी उसने एक शब्द अपने मन की इच्छा के अनुसरण में सत्य के ख़िलाफ़ मुँह से निकाला। क़ुरआन में है–

''(लोगो !) तुम्हारा 'साहब' न कभी सन्मार्ग से भटका और न शुद्ध विचारों से बहका और न वह अपनी मनेच्छा से बोलता है।'' (क़ुरआन-५३:२-३)

१०. वह बताता है कि उसके लानेवाले का व्यक्तित्व सारे संसार के लिए अनुकरणीय आदर्श है और उसकी पूरी ज़िन्दगी शिष्टाचार की पराकाष्ठा का सही मापदण्ड थी। क़ुरआन में है–

''तुम्हारे लिए पैग़म्बर के व्यक्तित्व में एक उत्तम आदर्श है।'' (क़ुरआन-३३:२१)

क़ुरआन का अध्ययन करने से क़ुरआन लानेवाले की कुछ अन्य विशेषताओं पर भी रोशनी पड़ती है परन्तु इस लेख में विस्तार की गुंजाइश नहीं। जो कोई क़ुरआन का अध्ययन करेगा वह ख़ुद देख लेगा कि अन्य सामयिक धर्म-ग्रन्थों के विपरीत यह ग्रन्थ अपने लानेवाले को जिस रूप में पेश करता है वह कितना स्पष्ट, शुद्ध और प्रदूषण से पाक है। उसमें न ईश्वरत्व का कोई ज़रा-सा भी अंश है न उसकी प्रशंसा और तारीफ़ में अतिशयोक्ति है, न असाधारण और अस्वाभाविक शक्तियाँ क़ुरआन को लाने वाले पैग़म्बर (हज़रत मुहम्मद सल्ल.) के अन्दर बताई गईं हैं और न उसे ईश्वर के कामों में साझी और हिस्सेदार ठहराया गया है। और न उसे ऐसे दोषों से आरोपित किया गया है जो एक रहनुमा और सत्य-संदेशवाहक की शान को बट्टा लगानेवाले हों। यदि इस्लामी साहित्य की अन्य सारी पुस्तकें संसार से लुप्त भी हो जाएँ और सिर्फ़ क़ुरआन ही बाक़ी रह जाए तब भी हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के व्यक्तित्व के विषय में किसी भ्रम, संदेह और विश्वासहीनता की गुंजाइश नहीं है। हम अच्छी तरह पता लगा सकते हैं कि इस ग्रन्थ को लानेवाला एक सिद्ध मनुष्य था, श्रेष्ठ आचार से परिपूर्ण था, पिछले पैग़म्बरों की पुष्टि करता था,किसी नये मत का प्रवर्तक न था और इंसानियत से परे किसी अस्वाभाविक हैसियत का दावेदार न था। उसका संदेश सारे संसार के लिए है, उसको ईश्वर की ओर कुछ निश्चित सेवाओं पर नियुक्त किया गया था और जब उसने उन सेवाओं को पूरी तरह से अंजाम दे दिया, तो पैग़म्बरी का सिलसिला उस पर समाप्त कर दिया गया।

१. हिन्दुओं के वर्तमान विश्वास के अनुसार ब्रह्माण्ड के प्रतिपालन करने वाले ईश्वर या देवता का नाम है। संभवत: प्रतिपालक ईश्वर की एक विशेषता थी जिसे बाद में एक स्थाई व्यक्तित्व मान लिया गया।

२. यदि गीता ख़ुद इस बात की दावेदार होती कि वह ईश्वर की पुस्तक है और कृष्णजी उसको पेश करनेवाले नबी हैं तो उपर्युक्त श्लोक ईश्वर के ठहराए जा सकते थे और कृष्ण जी से ईश्वरत्व का दावा न जुड़ा होता। परन्तु कठिनाई यह है कि यह पुस्तक ख़ुद अपने आपको कृष्णजी के अपने उपदेश के रूप में पेश करती है। पूरी गीता में उसके ईश्वरीय पुस्तक होने का कोई संकेत नहीं मिलता।

क़ुरआन और पैग़म्बर